भाग 1

व्यवसाय के आधार

अध्याय 1

व्यवसाय की प्रकृति एवं उद्देश्य

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप:

- व्यवसाय की अवधारणा व उसकी विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार के विशिष्ट लक्षणों की तुलना कर सकेंगे;
- व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण कर सकेंगे तथा उद्योग एवं वाणिज्य का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के उद्योगों को बता सकेंगे;
- वाणिज्य से संबंधित क्रिया-कलापों को समझा सकेंगे;
- व्यवसाय के उद्देश्यों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- व्यावसायिक जोखिमों एवं उनके कारणों की प्रकृति का वर्णन कर सकेंगे; एवं
- व्यवसाय प्रारंभ करते समय जिन मूलभूत कारकों को ध्यान में रखना चाहिए, उनकी विवेचना कर सकेंगे।

इमरान, मनप्रीत, जोसेफ तथा प्रियंका कक्षा दस में सहपाठी रहे हैं। उनकी परीक्षाएँ समाप्त होने के बाद वे रुचिका के घर में इकट्ठे होते हैं, जो उन सभी की मित्र है। जब वे अपनी परीक्षाओं के दिनों के अनुभवों को आपस में बांट रहे थे, तभी रुचिका के पिताजी श्री रघुराज चौधरी उनका हाल-चाल पूछते हैं। वे प्रत्येक से जानना चाहते हैं कि उनकी भावी योजना क्या है। लेकिन कोई भी सुनिश्चित उत्तर नहीं दे पाता। श्री रघुराज स्वयं में एक व्यवसायी हैं, वे उन्हें व्यवसाय को चुनने की सलाह देते हैं जो एक आशाजनक एवं चुनौतीपूर्ण जीवनवृत्ति है। जोसेफ इस विचार से उत्तेजित होकर कहता है कि ''हाँ व्यवसाय वास्तव में ढ़ेर सारा धन कमाने के लिए बहुत अच्छा है। यहाँ तक कि इंजीनियर तथा डॉक्टर बनने पर भी इतना धन नहीं कमाया जा सकता है।" श्री रघुराज अपना मत जताते हुए कहते हैं ''भई, व्यवसाय में धन के अतिरिक्त भी बहुत कुछ है।'' उसके बाद वे अन्य मेहमानों में व्यस्त हो जाते हैं। यद्यपि वे चारों सहपाठी परस्पर बहुत से प्रश्न उठाते हैं, लेकिन उन्हें कोई भी स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता। वे सोचने लगते हैं कि वास्तव में व्यवसाय है क्या? धन के अतिरिक्त व्यवसाय में और क्या है? अव्यवसायी क्रियाओं से व्यवसाय किस प्रकार भिन्न है? एक व्यवसाय को प्रारंभ करने के लिए क्या-क्या आवश्यक है? आदि, आदि।

1.1 परिचय

जाहिर है कि चारों सहपाठियों का वार्तालाप व्यवसाय के अर्थ, प्रकृति एवं उद्देश्य पर केंद्रित था। सभी मानव समयानुसार अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं की इच्छा अनुभव करते हैं। वस्तुओं एवं सेवाओं से आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कुछ लोग उन चीजों का उत्पादन एवं विक्रय करने लगे जिनकी दूसरों को जरूरत हो। आज सभी आधुनिक समाजों में व्यवसाय एक मुख्य आर्थिक क्रिया है, जिसका संबंध मनुष्यों की आवश्यकतानुसार वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन एवं विक्रय करना है। विभिन्न आर्थिक क्रियाओं का उद्देश्य मनुष्यों की वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग को पूरा करके धन कमाना है। व्यवसाय हमारे जीवन का केंद्रबिंदु है। यद्यपि हमारा जीवन आधुनिक समाज की बहुत-सी संस्थाओं, जैसे- विद्यालय, महाविद्यालय, औषधालय, राजनैतिक दल तथा धार्मिक संस्थाओं से प्रभावित होता है, लेकिन रोजमर्रा के जीवन में मुख्य प्रभाव व्यवसाय का ही होता है। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि व्यवसाय की अवधारणा, प्रकृति एवं उद्देश्य को पहले समझ लें।

1.2 व्यवसाय की अवधारणा

व्यवसाय शब्द की व्युत्पत्ति व्यस्त रहने से हुई है। अत: व्यवसाय का अर्थ व्यस्त रहना है, तथापि विशेष सदर्भ में, व्यवसाय का अर्थ ऐसे किसी भी धंधे से है, जिसमें लाभार्जन हेतु व्यक्ति विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में नियमित रूप से संलग्न रहते हैं। वे क्रियाएँ अन्य लोगों की आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु वस्तुओं के उत्पादन, क्रय-विक्रय या विनिमय और सेवाओं की आपूर्ति से संबंधित हो सकती हैं।

प्रत्येक समाज में मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु अनेकों प्रकार की क्रियाएँ करते हैं। ये क्रियाएँ विस्तृत रूप से दो समूहों में वर्गीकृत की जा सकती हैं– आर्थिक एवं अनार्थिक। आर्थिक क्रियाएँ, वे क्रियाएँ हैं, जिनके द्वारा हम अपने जीवन-यापन के लिए धन कमाते हैं, जबकि अनार्थिक क्रियाएँ प्यारवश, सहानुभूति के लिए, भावुकतावश या देश भक्ति आदि के लिए की जाती हैं। उदाहरण के लिए, एक श्रमिक द्वारा फैक्टरी में काम करना, एक डॉक्टर द्वारा अपने क्लिनिक में कार्य करना, एक प्रबंधक द्वारा अपने कार्यालय में काम करना तथा एक शिक्षक का विद्यालय में अध्यापन कार्य करना आदि उदाहरणों में, सभी अपनी जीविका उपार्जन के लिए कार्य कर रहे हैं। अतः ये सभी आर्थिक क्रियाओं में संलग्न हैं। दूसरी ओर एक गृहणी द्वारा अपने परिवार के लिए भोजन पकाना या एक वृद्ध व्यक्ति को सड़क पार कराने में एक बालक द्वारा सहायता करना अनार्थिक क्रियाएँ हैं, क्योंकि ये क्रियाएँ या तो प्रेमवश या सहानुभूतिवश की जा रही हैं। आर्थिक क्रियाओं को भी आगे तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे– व्यवसाय, धंधा या रोजगार। अतः व्यवसाय को एक आर्थिक क्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें वस्तुओं का उत्पादन व विक्रय तथा सेवाओं को प्रदान करना सम्मिलित है। उपरोक्त क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य समाज में मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करके धन कमाना है।

1.3 व्यावसायिक क्रियाओं की विशेषताएँ

समाज में व्यावसायिक क्रियाएँ अन्य क्रियाओं से किस प्रकार भिन्न हैं। यह समझने के लिए व्यवसाय की प्रकृति अथवा इसके आधारभूत लक्षणों को इसकी अद्वितीय विशेषताओं के सदंर्भ में स्पष्ट करना चाहिए, जो निम्नलिखित हैं:

(क) यह एक आर्थिक क्रिया है: व्यवसाय को एक आर्थिक क्रिया समझा जाता है, क्योंकि यह लाभ कमाने के उद्देश्य से या जीवन-यापन के लिए किया जाता है, न कि प्यार के कारण अथवा मोह, सहानुभूति या किसी अन्य भावुकता के कारण।

(ख) वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अथवा उनकी प्राप्ति: वस्तुओं को उपभोक्ताओं के उपभोग के लिए सुलभ कराने से पूर्व व्यावसायिक इकाईयों द्वारा या तो इनका उत्पादन किया जाता है या फिर इनका क्रय किया जाता है। अतः प्रत्येक व्यावसायिक इकाई जिन वस्तुओं में व्यापार करती है उनका या तो स्वयं उत्पादन करती है या आपूर्ति करने के लिए उत्पादकों से प्राप्त करती है। वस्तुएँ या तो उपभोक्ता वस्तुएँ हो सकती हैं जो प्रतिदिन काम आती हैं, जैसे– चीनी, पैन, नोट बुक या पूंजीगत वस्तुएँ जैसे– मशीन, फर्नीचर आदि। सेवाओं में यातायात, बैंक तथा विद्युत की आपूर्ति आदि को सम्मिलित किया जा सकता है, जो उपभोक्ताओं को सुविधाओं के रूप में सुलभ करायी जाती हैं।

(ग) मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं का विक्रय या विनिमयः प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यवसाय में मूल्य के बदले वस्तुओं और सेवाओं का हस्तांतरण व विनिमय सम्मिलित है। यदि वस्तुओं का उत्पादन, उत्पादक द्वारा स्वयं के उपभोग के लिए किया जाता है तो ऐसी क्रिया व्यावसायिक क्रिया नहीं कहलाती है। घर में परिवार के सदस्यों के लिए भोजन पकाना व्यवसाय नहीं हैं, लेकिन किसी रेस्तराँ में अन्य व्यक्तियों को बेचने के लिए भोजन पकाना व्यवसाय है। इस प्रकार व्यवसाय की यह एक आवश्यक विशेषता है कि वस्तुओं या सेवाओं का क्रय-विक्रय या विनिमय होना चाहिए।

(घ) नियमित रूप से वस्तुओं और सेवाओं का विनिमयः व्यवसाय की एक विशेषता यह है कि इसमें नियमित रूप से वस्तुओं और सेवाओं का लेन-देन होता है। एक बार का क्रय या विक्रय साधारणतः व्यवसाय नहीं कहलाता। उदाहरणार्थ, यदि कोई व्यक्ति अपना घरेलू रेडियो चाहे लाभ पर ही बेचे व्यावसायिक क्रिया नहीं कहलाएगी, लेकिन यदि वह अपनी दुकान पर या घर से नियमित रूप से रेडियो बेचता है तो यह एक व्यावसायिक क्रिया कहलाएगी।

(ङ) लाभ अर्जनः प्रत्येक व्यावसायिक क्रिया लाभ के रूप में आय-अर्जित करने के उद्देश्य से की जाती है। बिना लाभ कमाए कोई भी व्यवसाय लंबे समय तक कार्यरत नहीं रह सकता। इसीलिए व्यवसायकर्ता व्यवसाय का विक्रय की मात्रा बढ़ाकर या लागत कम करके अधिकतम लाभ कमाने का हर संभव प्रयास करता है।

(च) प्रतिफल की अनिश्चितताः प्रतिफल की अनिश्चितता से तात्पर्य व्यावसायिक क्रियाओं के संचालन से एक निश्चित समय में होने वाले लाभ की अस्थिरता से है। प्रत्येक व्यवसाय में परिचालन हेतु कुछ धन (पूंजी) के विनियोग की आवश्यकता होती है। व्यवसाय में विनियोजित पूंजी पर लाभ पाने की आशा तो होती है, लेकिन यह निश्चित नहीं होता

उद्यम स्तर पर व्यावसायिक कर्तव्य

व्यवसाय में निहित विभिन्न प्रकार के कार्यों को विभिन्न प्रकार के संगठनों द्वारा संपन्न किया जाता है जिन्हें व्यावसायिक इकाई या फर्म कहा जाता है। व्यवसाय के संचालन हेतु उद्यम चार मुख्य प्रकार के काम करते हैं, ये हैं— वित्त व्यवस्था, उत्पादन, विपणन तथा मानव संसाधन प्रबंधन। वित्त व्यवस्था का संबंध, व्यवसाय के संचालन के लिए वित्त जुटाने तथा उनका सही उपयोग करने से है। उत्पादन का अर्थ कच्चे माल को निर्मित माल में परिवर्तित करने या सेवाओं को उत्पन्न कराने से है। विपणन से तात्पर्य उन संपूर्ण क्रियाओं से है, जो वस्तुओं तथा सेवाओं के आदान-प्रदान में, उत्पादक से उन व्यक्तियों तक, उस स्थान व समय पर तथा उस कीमत पर उपलब्ध कराने से है जो वे चुकाने को तैयार हो एवं जिन्हें उनकी आवश्यकता हो। मानव संसाधन प्रबंधन को सुनिश्चित करता है उद्यम में विभिन्न प्रकार के कार्यों को पूरा करने का कौशल रखने वाले व्यक्तियों की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है।

कि लाभ कितना होगा। बल्कि सतत् प्रयासों के बावजूद भी हानि की आशंका सदैव बनी ही रहती है।

(छ) जोखिम के तत्त्वः जोखिम एक अनिश्चितता है, जो व्यावसायिक हानि की ओर इंगित करता है, जिनका कारण कुछ प्रतिकूल अथवा अवांछित घटकों से है। जोखिमों का संबंध कुछ व्यावसायिक घटनाओं से है, जैसे– उपभोक्ताओं की पसंद या फैशन में परिवर्तन, उत्पादन विधियों में परिवर्तन, कार्यस्थल पर हड़ताल या तालेबंदी, बाजार-प्रतिस्पर्धा, आग, चोरी, दुर्घटनाएँ, प्राकृतिक आपदाएँ आदि से होता है। कोई भी व्यवसाय जोखिमों से अछूता नहीं रहता।

व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार में तुलना

आधार	व्यवसाय	पेशा	रोजगार
1. स्थापना की विधि	उद्यमी का निर्णय तथा अन्य कानूनी औपचारिकताएँ, यदि आवश्यक हों	किसी व्यावसायिक संस्था की सदस्यता तथा व्यावहारिक योग्यता का प्रमाण-पत्र	नियुक्ति-पत्र तथा सेवा समझौता
2. कार्य की प्रकृति	जनता को वस्तुओं तथा सेवाओं की सुलभता	व्यक्तिगत विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करना	सेवा समझौता या सेवा के नियमों के अनुसार कार्य करना।
3. योग्यता	किसी न्यूनतम योग्यता की आवश्यकता नहीं	विशेष क्षेत्र में प्रशिक्षण तथा विशेष योग्यता (निपुणता) अतिआवश्यक	नियोक्ता द्वारा निर्धारित योग्यता एवं प्रशिक्षण
4. प्रतिफल	अर्जित लाभ	फीस	वेतन या मजदूरी
5. पूँजी निवेश	व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार के अनुसार पूँजी निवेश आवश्यक	स्थापना के लिए सीमित पूंजी आवश्यक	पूंजी की आवश्यकता नहीं
6. जोखिम	लाभ अनिश्चित तथा अनियमित जोखिम सदैव	फीस नियमित एवं निश्चित, कुछ जोखिम भी।	निश्चित एवं नियमित वेतन, कोई जोखिम नहीं।
7. हित-हस्तांतरण	कुछ औपचारिकताओं के साथ हित हस्तांतरण संभव	संभव नहीं	संभव नहीं
8. आचार संहिता	कोई आचार संहिता निर्धारित नहीं	पेशेवर आचार संहिता का पालन आवश्यक	व्यवहार के लिए नियोक्ता द्वारा निर्धारित नियमों का पालन आवश्यक

1.4 व्यवसाय पेशा तथा रोजगार में तुलना

जैसा पहले बतलाया जा चुका है कि आर्थिक क्रियाओं को तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

1. व्यवसाय
2. पेशा
3. रोजगाार

व्यवसाय का अभिप्राय उन आर्थिक क्रियाओं से है, जिनका संबंध लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं का उत्पादन या क्रय-विक्रय या सेवाओं की पूर्ति से है। व्यवसाय में संलग्न व्यक्ति द्वारा अपनी आय लाभ के रूप में दर्शायी जाती है।

पेशे में, वे क्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनमें विशेष ज्ञान व दक्षता की आवश्यकता होती है और व्यक्ति इनका प्रयोग अपने धंधे में आय अर्जन हेतु करता है। इस प्रकार की क्रियाओं के लिए पेशेवर संस्थाओं द्वारा साधारणतया कुछ मार्ग दर्शिकाएँ व आचार संहिताएँ बनाई जाती हैं। पेशे में सलग्न व्यक्तियों को पेशेवर कहा जाता है। उदाहरणार्थ चिकित्सक, चिकित्सा पेशे में 'भारतीय चिकित्सक परिषद' के नियमानुसार कार्य करते हैं। वकील 'भारतीय बार काउंसिल' के अनुरूप वकालत के पेशे में कार्यरत होते हैं। लेखाकार लेखांकन पेशे से संबंधित हैं तथा 'भारतीय चार्टर्ड एकाउंटेंट्स इंस्टीट्यूट' के नियमों के अनुसार कार्य करते हैं।

रोजगार का अभिप्राय उन धंधों से है, जिनमें लोग नियमित रूप से दूसरों के लिए कार्य करते हैं और बदले में पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं। वे व्यक्ति जो अन्य व्यक्तियों द्वारा नियुक्त किए जाते हैं, कर्मचारी कहलाते हैं। अत: वे व्यक्ति जो कारखानों में काम करते हैं और बदले में वेतन अथवा मजदूरी पाते हैं तथा कारखाने के मालिकों की नौकरी में लगे होते हैं, उन्हें कारखानों के कर्मचारी कहते हैं। इसी प्रकार जो व्यक्ति बैंकों, बीमा कंपनियों या सरकारी विभागों के कार्यालयों में प्रबंधकों, सहायकों, क्लर्कों, चपरासियों या चौकीदारों के रूप में कार्य करते हैं, वे रोजगार करने वाले वर्ग के अंतर्गत आते हैं।

1.5 व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण

विभिन्न व्यावसायिक क्रियाओं को दो विस्तृत वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है- उद्योग एवं वाणिज्य। उद्योग से तात्पर्य वस्तुओं का उत्पादन अथवा प्रक्रियण है। वाणिज्य में वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित की जाती हैं, जो वस्तुओं के आदान-प्रदान, संभरण तथा वितरण को संभव बनाती हैं। इन दो वर्गों के आधार पर हम व्यावसायिक फर्मों को औद्योगिक उद्यम तथा वाणिज्यिक उद्यम की श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं।

अब हमें व्यावसायिक क्रियाओं का विस्तृत अध्ययन करना है:

1.6 उद्योग

उद्योग से अभिप्राय उन आर्थिक क्रियाओं से है, जिनका संबंध संसाधनों को उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तन करना है। उद्योग शब्द का प्रयोग

उन क्रियाओं के लिए किया जाता है, जिनमें यांत्रिक-उपकरण एवं तकनीकी कौशल का प्रयोग होता है। इनमें वस्तुओं के उत्पादन अथवा प्रक्रिया तथा पशुओं के प्रजनन एवं पालन से संबंधित क्रियाएँ सम्मिलित हैं। व्यापक अर्थो में उद्योग का अर्थ समान वस्तुओं अथवा संबंधित वस्तुओं के उत्पादन में लगी इकाईयों के समूह से है। उदाहरण के लिए, रूई अथवा कपास से सूती वस्त्र आदि बनाने वाली सभी इकाईयों को उद्योग कहते हैं। इन्हीं के समकक्ष बैंकिंग, बीमा आदि की सेवाएँ भी उद्योग कहलाती हैं, जैसे-बैंकिंग उद्योग, बीमा उद्योग आदि। उद्योगों को तीन व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है- प्राथमिक उद्योग, द्वितीयक या माध्यमिक उद्योग एवं तृतीयक या सेवा उद्योग।

(क) प्राथमिक उद्योग: इन उद्योगों में, वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनका संबंध प्राकृतिक संसाधनों के खनन एवं उत्पादन तथा पशु एवं वनस्पति के विकास से है। इन उद्योगों को पुन: इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

(अ) निष्कर्षण उद्योग: ये उद्योग उत्पादों को प्राकृतिक स्रोतों से निष्कर्षित करते हैं। निष्कर्षण उद्योग आधारभूत कच्चे माल की आपूर्ति करते हैं जो प्राय:

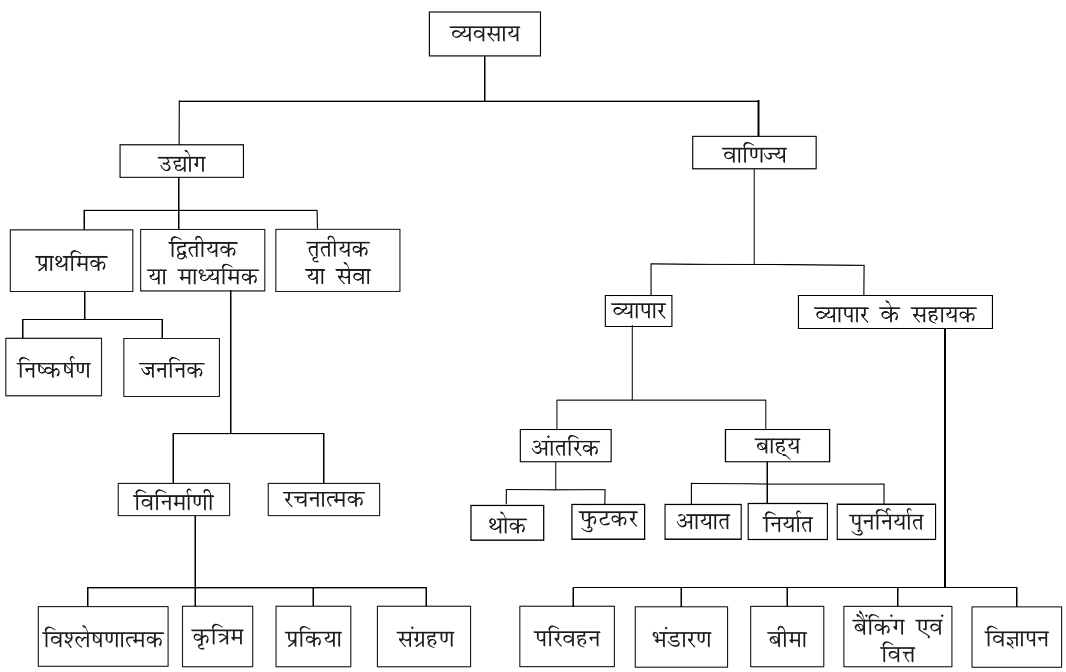

व्यावसायिक क्रियाएँ सारिणी

भूमि से प्राप्त किया जाता है। इन उद्योगों के उत्पादों को दूसरे विनिर्माणी उद्योगों द्वारा बहुत-सी उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तित किया जाता है। मुख्य निष्कर्षण उद्योगों में खेती करना, उत्खनन, इमारती लकड़ी, शिकार तथा मछली पकड़ना आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(ब) जननिक उद्योग: इन उद्योगों का मुख्य कार्य पशु-पक्षियों का प्रजनन एवं पालन तथा वनस्पति उगाना है, ताकि उनका उपयोग आगे विभिन्न उत्पादों के लिए किया जा सके। जननिक उद्योग, पौधों के प्रजनन के लिए 'बीज तथा पौध संवर्धन (नर्सरी) कंपनियाँ' इसके विशेष उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त पशु प्रजनन फार्म, मुर्गी पालन, मछली पालन आदि जननिक उद्योगों के अन्य उदाहरण हैं।

(ख) द्वितीयक या माध्यमिक उद्योग: इन उद्योगों में खनन उद्योगों द्वारा निष्कर्षित माल को कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। इन उद्योगों द्वारा निर्मित माल या तो अंतिम उपभोग के लिए उपयोग में लाया जाता है या दूसरे उद्योगों में आगे की प्रक्रिया में उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ– कच्चा लोहा खनन, प्राथमिक उद्योग है, तो स्टील का निर्माण करना द्वितीयक या माध्यमिक उद्योग है। माध्यमिक उद्योगों को आगे निम्न श्रेणियों में विभक्त किया सकता जाता है।

(अ) विनिर्माण उद्योग: इन उद्योगों द्वारा कच्चे माल को प्रक्रिया में लेकर उन्हें अधिक उपयोगी बनाया जाता है। इस प्रकार ये प्रारूप उपयोगिता का सृजन करते हैं। ये उद्योग कच्चे माल से तैयार माल बनाते हैं, जिनका हम उपयोग करते हैं। विनिर्माणी उद्योगों को उत्पादन प्रक्रिया के आधार पर चार श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

- विश्लेषणात्मक उद्योग: ये उद्योग एक ही उत्पाद के विश्लेषण एवं पृथकीकरण द्वारा तत्त्वों को उत्पादित करते हैं, जैसे-तेल शोधक कारखाने।
- कृत्रिम उद्योग: ये उद्योग विभिन्न संघटकों को एकत्रित करके प्रक्रिया द्वारा एक नये उत्पादों का रूप देते हैं, जैसे-सीमेंट उद्योग।
- प्रक्रियायी या प्रक्रमीय उद्योग: वे उद्योग, जो पक्के माल के निर्माण के लिए विभिन्न क्रमिक चरणों से गुजरते हैं। उदाहरणार्थ-चीनी तथा कागज़ उद्योग।
- सम्मेलित उद्योग: जो उद्योग एक नया उत्पाद तैयार करने के लिए विभिन्न पुर्जों को जोड़ते हैं। उदाहरणस्वरूप-टेलीविजन, कार तथा कंप्यूटर आदि।

(ब) निर्माण उद्योग: ऐसे उद्योग, जैसे-भवन, बांध, पुल, सड़क, सुरंग तथा नहरों के निर्माण में संलग्न रहते हैं। इन उद्योगों में अभियांत्रिकी तथा वास्तुकलात्मक चातुर्य महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं।

(ग) **तृतीयक या सेवा उद्योगः** इस प्रकार के उद्योग प्राथमिक तथा द्वितीयक उद्योगों को सहायक सेवाएँ सुलभ कराने में संलग्न होते हैं तथा व्यापारिक क्रिया-कलापों को संपन्न कराते हैं। ये उद्योग सेवा-सुविधा सुलभ कराते हैं। व्यावसायिक क्रियाओं में, ये उद्योग वाणिज्य के सहायक अंग समझे जाते हैं, क्योंकि ये उद्योग-व्यापार की सहायता करते हैं। इस वर्ग में यातायात, बैंकिंग, बीमा, माल-गोदाम, दूरसंचार, डिब्बा-बंदी तथा विज्ञापन आदि आते हैं।

1.7 वाणिज्य

वाणिज्य में दो प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं, पहली वे जो माल की बिक्री अथवा विनिमय के लिए की जाती हैं, इन्हें व्यापार कहते हैं। दूसरी वे विभिन्न सेवाएँ जो व्यापार में सहायक होती हैं। इन्हें सेवाएँ अथवा व्यापार सहायक क्रियाएँ कहते हैं, जिनमें परिवहन बैंकिंग, बीमा, दूरसंचार, विज्ञापन, पैकेजिंग एवं गोदाम व्यवस्था आदि सम्मिलित होती हैं। वाणिज्य, उत्पादक और उपभोक्ता के बीच की आवश्यक कड़ी का काम करता है। इसमें वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं, जो वस्तु एवं सेवाओं के अबाध प्रवाह को बनाए रखने के लिए आवश्यक होती हैं। अतः वाणिज्य को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है कि ये वे क्रियाएँ हैं जो विनिमय में आने वाली बाधाओं को दूर करती हैं। विनिमय संबंधी बाधा को व्यापार दूर करता है, जो वस्तुओं को उत्पादक से लेकर उपभोक्ता तक पहुंचाता है। परिवहन स्थान संबंधी बाधा को दूर करता है, जो वस्तुओं को उत्पादन स्थल से बिक्री स्थल तक ले जाता है। संग्रहण एवं भंडारण, समय संबंधी रुकावट को दूर करते हैं। इसमें माल को गोदाम में बिक्री के समय तक रखा जाता है। गोदाम में रखे माल एवं स्थानांतरण के समय मार्ग में माल की चोरी, आग, दुर्घटना आदि जोखिमों से हानि हो सकती है। इन जोखिमों से माल का बीमा कर सुरक्षा प्रदान की जा सकती है। इन सभी क्रियाओं के लिए आवश्यक पूंजी, बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से प्राप्त होती है। विज्ञापन के द्वारा उत्पादक एवं व्यापारी, उपभोक्ताओं को बाजार में उपलब्ध वस्तुओं एवं सेवाओं के संबंध में सूचना देते हैं। अतः वाणिज्य से अभिप्राय उन क्रियाओं से है जो वस्तु एवं सेवाओं के विनिमय में आने वाली व्यक्ति, स्थान, समय, वित्त एवं सूचना संबंधी बाधाओं को दूर करती हैं।

1.7.1 व्यापार

व्यापार वाणिज्य का अनिवार्य अंग है। इसका अर्थ वस्तुओं की बिक्री, हस्तांतरण अथवा विनिमय से है। यह उत्पादित वस्तुओं को अंतिम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराता है। आज के युग में, वस्तुओं का उत्पादन वृहद् पैमाने पर किया जाता है, लेकिन उत्पादकों के लिए अपनी वस्तुओं की बिक्री प्रत्येक उपभोक्ता को अलग-अलग कर पाना दुष्कर है। व्यापारी मध्यस्थ के रूप में व्यापारिक क्रियाएँ करते हुए विभिन्न बाजारों में उपभोक्ताओं को वस्तुएँ

उपलब्ध कराते हैं। व्यापार व्यक्ति अर्थात् उत्पादक तथा उपभोक्ता संबंधी बाधा को दूर करता है। व्यापार की अनुपस्थिति में बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव नहीं हो सकता है।

व्यापार को दो बड़े वर्गों में विभाजित किया जा सकता है– आंतरिक और बाह्य। आंतरिक अथवा देशी व्यापार में वस्तुओं और सेवाओं का आदान–प्रदान एक ही देश की भौगोलिक सीमाओं के अंदर किया जाता है। इसी को आगे थोक और फुटकर व्यापार में विभाजित किया जा सकता है। जब वस्तुओं का क्रय–विक्रय बड़ी भारी मात्रा में किया जाता है, तो उसे थोक व्यापार तथा जब वस्तुओं का क्रय विक्रय अपेक्षाकृत कम मात्रा में किया जाता है, तो उसे फुटकर व्यापार कहा जाता है। बाह्य एवं विदेशी व्यापार में वस्तुओं एवं सेवाओं का आदान–प्रदान दो या दो से अधिक देशों के व्यक्तियों अथवा संगठनों के मध्य किया जाता है। यदि वस्तुओं का क्रय दूसरे देश से किया जाता है, तो उसे आयात व्यापार कहते हैं तथा जब वस्तुओं का विक्रय दूसरे देशों को किया जाता है, तो उसे निर्यात व्यापार कहते हैं। जब वस्तुओं का आयात किसी अन्य देश को निर्यात करने के लिए किया जाता है, तो उसे पुर्ननिर्यात या आयात–निर्यात व्यापार कहते हैं।

1.7.2 व्यापार के सहायक

व्यापार में सहायक क्रियाओं को व्यापार के सहायक कहते हैं। इन क्रियाओं को सेवाएँ भी कहते हैं, क्योंकि ये उद्योग एवं व्यापार में सहायक होती हैं। परिवहन, बैंकिंग, बीमा, भंडारण एवं विज्ञापन व्यापार के सहायक कार्य हैं, अर्थात् ये वे क्रियाएँ हैं जो सहायक की भूमिका निभाती हैं। वास्तव में, ये क्रियाएँ न केवल व्यापार में सहायक होती हैं, बल्कि उद्योग में भी सहायक होती हैं और इस प्रकार से पूरे व्यवसाय के लिए सहायक होती हैं। वास्तव में सहायक क्रियाएँ पूरे व्यवसाय का तथा विशेष रूप से वाणिज्य का अभिन्न अंग हैं। ये क्रियाएँ वस्तुओं के उत्पादन एवं वितरण में आने वाली बाधाओं को दूर करने में सहायक होती हैं। परिवहन माल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में सहायक होता है। बैंकिंग, व्यापारियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। बीमा विभिन्न प्रकार की जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करता है। भंडारण संग्रहण व्यवस्था के द्वारा समय की उपयोगिता का सृजन करता है। विज्ञापन के माध्यम से सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। दूसरे शब्दों में, ये क्रियाएँ माल के स्थानांतरण, संग्रहण, वित्तीयन, जोखिम से सुरक्षा एवं माल की बिक्री संवर्धन को सरल बनाती हैं। सहायक कार्यों का संक्षेप में वर्णन निम्न है:–

(क) परिवहन एवं संप्रेषण: वस्तुओं का उत्पादन कुछ विशिष्ट जगहों पर होता है। उदाहरणार्थ–चाय असम में, रुई गुजरात तथा महाराष्ट्र में, जूट पश्चिमी बंगाल और उड़ीसा में, चीनी उत्तर प्रदेश, बिहार तथा महाराष्ट्र आदि में, लेकिन उपभोग के लिए इन वस्तुओं की आवश्यकता देश के सभी भागों में होती है। स्थान संबंधी बाधा को सड़क परिवहन, रेल परिवहन या तटीय जहाजरानी दूर करती है। परिवहन के द्वारा कच्चा माल उत्पादन स्थल

पर लाया जाता है तथा तैयार माल को कारखाने से उपभोग के स्थान तक ले जाया जाता है। परिवहन के साथ संप्रेषण माध्यमों की भी आवश्यकता होती है, जिससे की उत्पादक, व्यापारी एवं उपभोक्ता एक दूसरे से सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकें। अत: डाक एवं टेलीफोन सेवाएँ भी व्यावसायिक क्रियाओं की सहायक मानी जाती हैं।

(ख) बैंकिंग एवं वित्त: धन के बिना व्यवसाय का संचालन संभव नहीं, क्योंकि धन की आवश्यकता परिसंपत्तियों के क्रय करने तथा नित्य-प्रति के व्ययों को पूरा करने के लिए होती है। व्यवसायी आवश्यक धन राशि बैंक से प्राप्त कर सकते हैं। बैंक वित्त की समस्या का समाधान कर व्यवसाय की सहायता करते हैं। वाणिज्यिक बैंक अधिविकर्ष एवं नकद साख, ऋण एवं अग्रिम के माध्यम से राशि उधार देते हैं। बैंक चैकों की वसूली धन अन्य स्थानों पर भेजने तथा व्यापारियों की ओर से बिलों को भुनाने का कार्य भी करते हैं। विदेशी व्यापार में, वाणिज्यिक बैंक आयातकों एवं निर्यातकों दोनों की ओर से भुगतान की व्यवस्था भी करते हैं। वाणिज्यिक बैंक जनसाधारण से पूंजी एकत्रित करने में भी कंपनी प्रवर्तकों की सहायता करते हैं।

(ग) बीमा: व्यवसाय में अनेकों प्रकार के जोखिम होते हैं। कारखाने की इमारत, मशीन, फर्नीचर आदि का आग, चोरी एवं अन्य जोखिमों से बचाव आवश्यक है। माल एवं अन्य वस्तुएँ चाहे गोदाम में हों या मार्ग में, उनके खोने अथवा क्षतिग्रस्त हो जाने का भय रहता है। कर्मचारियों की भी दुर्घटना अथवा व्यावसायिक जोखिमों से सुरक्षा आवश्यक है। बीमा इन सभी को सुरक्षा प्रदान करता है। एक साधारण से प्रीमियम की राशि का भुगतान कर बीमा कंपनी से हानि अथवा क्षति की राशि की एवं शारीरिक दुर्घटनावश चोट से होने वाली क्षति की पूर्ति कराई जा सकती है।

(घ) भंडारण: प्राय: वस्तुओं के उत्पादन के तुरंत पश्चात् ही उनका उपयोग या विक्रय नहीं होता। उन्हें आवश्यकता पड़ने पर सुलभ कराने के लिए गोदामों में सुरक्षित रखा जाता है। माल को क्षति से बचाने के लिए उसकी सुरक्षा आवश्यक होती है। इसलिए उसके सुरक्षित संग्रहण की विशेष व्यवस्था की जाती है। भंडारण व्यावसायिक इकाइयों को संग्रहण की कठिनाई को हल करने में सहायता प्रदान करता है तथा वस्तुओं को उस समय उपलब्ध कराता है जब उनकी आवश्यकता होती है। वस्तुओं की लगातार आपूर्ति द्वारा मूल्यों को उचित स्तर पर रखा जा सकता है।

(ङ) विज्ञापन: विज्ञापन वस्तुओं के संवर्धन की महत्त्वपूर्ण विधियों में से एक है। विशेष रूप से उपभोक्ता वस्तुओं जैसे- इलैक्ट्रोनिक वस्तुएँ, स्वचालित वाहन, साबुन, डिटरजेंट पाउडर आदि। इनमें से अधिकांश का निर्माण एवं बाज़ार में आपूर्ति अनेकों छोटी-बड़ी इकाइयों द्वारा की जाती है। उत्पादकों एवं व्यापारियों का प्रत्येक उपभोक्ता से व्यक्तिगत रूप में मिलना संभव नहीं होता। विक्रय बढ़ाने हेतु विभिन्न उत्पादों (उनकी विशेषताएँ व मूल्य आदि) की सूचना प्रत्येक संभावित ग्राहक

तक पहुँचाना आवश्यक होता है। साथ ही उपभोक्ता को वस्तुओं के प्रयोग, गुणवत्ता तथा मूल्य आदि के संबंध में स्पर्धात्मक जानकारी देकर अपने उत्पाद खरीदने को लुभाने के लिए वस्तुओं का विज्ञापन आवश्यक है। इस प्रकार विज्ञापन बाजार में उपलब्ध वस्तुओं के संबंध में सूचना देने एवं उपभोक्ता को वस्तु विशेष को क्रय करने के लिए तत्पर करने में सहायक होता है।

1.8 व्यवसाय के उद्देश्य

व्यवसाय का प्रारंभ बिंदु कोई उद्देश्य होता है। सभी व्यवसाय कुछ उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रति अभिमुख होते हैं। ये उद्देश्य उस ओर संकेत करते हैं, कि व्यवसायी अपने कार्यों के बदले क्या प्राप्त करना चाहते हैं। साधारणतया यह समझा जाता है कि व्यवसाय का संचालन केवल लाभ कमाने के लिए होता है। व्यवसायी स्वयं भी यह दर्शाते हैं कि वस्तुओं अथवा सेवाओं के उत्पादन या वितरण करने में उनका मुख्य लक्ष्य लाभ कमाना ही है। समस्त व्यवसाय ही लागत से अधिक कमाने का व्यावसायियों का प्रयास कहलाता है। दूसरे शब्दों में, व्यवसाय का उद्देश्य लाभ अर्जित करना है, जो लागत पर आगम का आधिक्य है। आज के युग में, यह सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया है कि व्यावसायिक इकाइयाँ समाज का एक अंग हैं और उनके कुछ उद्देश्य, सामाजिक उत्तरदायित्वों सहित होने चाहिए ताकि वे लंबे समय तक चल सकें तथा प्रगति कर सकें। लाभ, अग्रणी उद्देश्य होता है, लेकिन एकमात्र नहीं।

यद्यपि लाभ कमाना ही व्यवसाय का एक उद्देश्य नहीं हो सकता, लेकिन इसके महत्त्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती। प्रत्येक व्यवसाय का यह प्रयत्न होता है कि जो कुछ भी उसने निवेश किया है उससे अधिक प्राप्त किया जाए। लागत से आगम का आधिक्य लाभ कहलाता है। लाभ व्यवसाय का विभिन्न कारणों से एक आवश्यक उद्देश्य माना जाता है।

(अ) यह व्यवसायी के लिए आय का स्रोत है।
(ब) यह व्यवसाय के विस्तार के लिए आवश्यक वित्त का स्रोत हो सकता है।
(स) यह व्यवसाय की कुशल कार्यशैली का द्योतक होता है।
(द) यह व्यवसाय का समाज के लिए उपयोगी होने की स्वीकारोक्ति भी हो सकता है। तथा
(न) यह एक व्यावसायिक इकाई की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।

फिर भी, एक अच्छे व्यवसाय के लिए केवल लाभ पर बल देना तथा दूसरे उद्देश्यों को भुला देना, खतरनाक साबित हो सकता है। यदि व्यवसाय के प्रबंधक केवल लाभ के मनोग्रस्त हो जाएँ तो वे ग्राहकों, कर्मचारियों, विनियोजकों तथा समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को भुला सकते हैं तथा तत्काल लाभ कमाने के लिए समाज के विभिन्न वर्गों का शोषण भी कर सकते हैं। इसका नतीजा, यह हो सकता है कि प्रभावित लोग उस व्यावसायिक इकाई के साथ असहयोग करें या उसके दुराचरण का विरोध करें। फलस्वरूप इकाई का धंधा चौपट हो सकता है और वह लाभ नहीं कमा पाता।

यही कारण है कि ऐसा व्यवसाय मुश्किल से ही मिलता है जिसका उद्देश्य केवल अधिक से अधिक लाभ कमाना हो।

1.8.1 व्यवसाय के बहुमुखी उद्देश्य

किसी उद्यम के लाभ में लगातार वृद्धि, समाज को उपयोगी सेवाएँ प्रदान करने के कारण हो सकती है। वास्तव में उद्देश्य हर उस क्षेत्र में वांछनीय है, जो प्रत्येक क्षेत्र में व्यवसाय को जीवित रखते हैं तथा समृद्धि को प्रभावित करते हैं। यदि किसी व्यवसाय को आवश्यकता तथा लक्ष्य में संतुलन रखना है तो उसे बहुमुखी उद्देश्यों को भी अपने सम्मुख रखना होगा। वह केवल एक लक्ष्य को सामने रखकर महारथ हासिल नहीं कर सकता। उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र में विशिष्ट तथा व्यवसाय के अनुरूप होने चाहिए। उदाहरणार्थ–विक्रय मात्रा का निर्धारण होना चाहिए, जो पूंजी एकत्रित करनी है उसका अनुमान होना चाहिए तथा उत्पाद की इकाईयों का लक्ष्य भी निर्धारित होना चाहिए। उद्देश्य यह बताते हैं कि व्यवसाय निश्चित रूप से यह कार्य करने जा रहा है ताकि वह अपने क्रियाकलापों का विश्लेषण कर सके तथा अपने कार्य के निष्पादन में सुधार ला सके। व्यवसाय के लिए उद्देश्यों की आवश्यकता प्रत्येक उस क्षेत्र में होती है, जहाँ निष्पादन परिणाम व्यवसाय के जीवित रहने और समृद्धि को प्रभावित करते हैं। उनमें से कुछ क्षेत्रों का वर्णन नीचे किया गया है:

(क) बाज़ार स्थिति: बाज़ार स्थिति से तात्पर्य एक उद्यम की उसके प्रतियोगियों से संबंधित अवस्था से है। एक उद्यम को अपने उपभोक्ताओं को प्रतियोगी उत्पाद उपलब्ध करवाने तथा उन्हें संतुष्ट रखने के लिए अपने पैरों पर मज़बूती से खड़े रहना चाहिए।

(ख) नवप्रवर्तन: नवप्रवर्तन से तात्पर्य नए विचारों का समावेश या जिस विधि से कार्य किया जाता है उसमें कुछ नवीनता लाने से है प्रत्येक व्यवसाय नवप्रवर्तन की दो विधियाँ हैं।

- उत्पाद अथवा सेवा में नवप्रवर्तन तथा
- उनकी पूर्ति में निपुणता तथा सक्रियता में नवप्रवर्तन की आवश्यकता। कोई भी व्यवसाय आधुनिक प्रतियोगिता के युग में बिना नवप्रवर्तन के फल–फूल नहीं सकता। अत: नवप्रवर्तन एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

(ग) उत्पादकता: उत्पादकता का मूल्यांकन उत्पादन के मूल्य की निवेश के मूल्य से तुलना करके किया जाता है। इसका प्रयोग कुशलता के माप के रूप में किया जाता है। लंबे समय तक चलते रहने तथा प्रगति के लिए प्रत्येक उद्यम को उपलब्ध स्रोतों का, अधिकतम सदुपयोग करते हुए विशाल उत्पादकता की ओर लक्ष्य रखना चाहिए।

(घ) भौतिक एवं वित्तीय संसाधन: प्रत्येक व्यवसाय को संयंत्र (प्लांट), मशीन तथा कार्यालय इत्यादि जैसे–भौतिक स्रोतों तथा वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। इन कोषों की सहायता से संसाधनों वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन कर के उपभोक्ताओं

तक पहुँचा जा सके। व्यावसायिक इकाइयाँ इन स्रोतों को अपनी आवश्यकतानुसार प्राप्त कर उनका दक्षतापूर्ण प्रयोग करना चाहिए।

(ङ) लाभार्जन: लाभार्जन से तात्पर्य विनियोजित पूंजी पर लाभार्जन से है। प्रत्येक व्यवसाय का एक मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लाभ व्यवसाय की सफलता का एक सुदृढ़ परीक्षण है।

(च) प्रबंध निष्पादन एवं विकास:प्रत्येक उद्यम की, अपने प्रबंधक से यह अपेक्षा रहती है कि वह व्यावसायिक क्रियाओं में उचित आचार संहिता तथा सामंजस्य स्थापित करें। अत: प्रबंध निष्पादन एवं विकास बहुत ही महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। इस उद्देश्य के लिए उद्यमों को सक्रियता से कार्य करना चाहिए।

(छ) कर्मचारी निष्पादन एवं मनोवृत्ति: किसी भी (कर्तव्य) व्यवसाय की उत्पादकता तथा लाभार्जन क्षमता में योगदान की मात्रा कर्मचारियों द्वारा कार्य का निष्पादन एवं उनकी मनोवृत्ति निर्धारित करती है। अत: प्रत्येक व्यवसाय को कर्मचारियों द्वारा किए हुए कार्यों में सुधार लाना और कर्मचारियों के प्रति सकारात्मक व्यवहार का आश्वासन देने का प्रयत्न करना चाहिए।

(ज) सामाजिक उत्तरदायित्व: सामाजिक उत्तरदायित्व से तात्पर्य, व्यावसायिक फर्मों के दायित्व से है वे समाज की समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक स्रोत जुटाएँ तथा आवश्यकतानुसार सामाजिक सेवा का कार्य करें।

अत: एक व्यावसायिक उपक्रम को विभिन्न व्यक्तियों तथा समुदायों के हित में, अपने उत्तरदायित्व तथा उनकी समृद्धि के लिए अग्रसर रहना चाहिए।

1.8.2 व्यावसायिक जोखिम

व्यावसायिक जोखिम से आशय अपर्याप्त लाभ या फिर हानि होने की उस संभावना से है जो नियंत्रण से बाहर अनिश्चितताओं या आकस्मिक घटनाओं के कारण होती है। उदाहरणार्थ किसी वस्तु विशेष की मांग में कमी, उपभोक्ताओं की रुचि या प्राथमिकताओं में परिवर्तन या उसी प्रकार के उत्पाद बेचने वाली प्रतियोगी संस्थाओं में प्रतिस्पर्धा अधिक होने से लाभ में कमी, बाज़ार में कच्चे माल की कमी के कारण मूल्यों में वृद्धि आदि। जो फर्म ऐसे कच्चे माल को उपयोग में ला रही हैं। उन्हें इसे क्रय करने के लिए अधिक राशि का भुगतान करना पड़ता है। परिणामत: लागत मूल्य बढ़ जाता है इस कारण लाभ में कमी आ सकती है।

व्यवसायों को निश्चित रूप से दो प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ता है–अनिश्चितता और शुद्ध। अनिश्चितता जोखिमों में दोनों संभावनाएँ विद्यमान होती हैं लाभ की भी तथा हानि की भी। संदिग्ध हानियाँ बाज़ार की दशा जिसमें मांग व पूर्ति में उतार-चढ़ाव सामिल हैं तथा इस कारण मूल्यों में आए परिवर्तन से, या ग्राहकों की रूचि या फैशन में परिवर्तन होने के कारण, होती हैं। यदि बाज़ार की दशा व्यवसाय के पक्ष में है तो लाभ हो सकता है। दशा विपरीत होने की अवस्था में हानि की संभावना

रहती है। शुद्ध हानियों में या तो हानि होगी अथवा हानि नहीं होगी। आग लगना, चोरी होना या हड़ताल होना शुद्ध हानियों के उदाहरण हैं। यदि ये घटनाएँ घटित होती हैं तो हानि होगी तथा इन घटनाओं के घटित न होने पर हानि नहीं होगी।

1.9 व्यावसायिक जोखिमों की प्रकृत्ति

व्यावसायिक जोखिमों को समझने के लिए इनकी विशिष्ट विशेषताओं का ज्ञान आवश्यक है:

(क) व्यावसायिक जोखिम अनिश्चितताओं के कारण होते हैं: अनिश्चितता से तात्पर्य, भविष्य में होने वाली घटनाओं की अनभिज्ञता से है। प्राकृतिक आपदाएँ, मांग और मूल्य में परिवर्तन सरकारी नीति में परिवर्तन, तकनीक में सुधार आदि ऐसे उदाहरण हैं जिनसे अनिश्चितता बनी रहती है। ये परिवर्तन व्यवसाय के लिए जोखिम के कारण हो सकते हैं। इन कारणों का पहले से ज्ञान नहीं हो सकता है।

(ख) जोखिम प्रत्येक व्यवसाय का आवश्यक अंग होता है: प्रत्येक व्यवसाय में जोखिम होता है। कोई भी व्यवसाय इससे अछूता नहीं है। यद्यपि व्यवसाय में हानि की मात्रा भिन्न हो सकती है। जोखिम को कम किया जा सकता है लेकिन समाप्त नहीं किया जा सकता।

(ग) जोखिम की मात्रा मुख्यतः व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार पर निर्भर करती है: व्यवसाय की प्रकृति (उत्पादित एवं विक्रित वस्तुओं और सेवाओं के प्रकार) तथा व्यवसाय का आकार (उत्पादन एवं विक्रय की मात्रा) ये मुख्य घटक हैं जो व्यवसाय में जोखिम की मात्रा का निर्धारण करते हैं। उदाहरणार्थ–जो व्यवसाय फैशन की चीजों में लेन–देन करते हैं, उनमें जोखिम की मात्रा अधिक होती है। उसी प्रकार वृहद् स्तरीय व्यवसाय में लघु स्तरीय व्यवसाय की अपेक्षा जोखिम अधिक होता है।

(घ) जोखिम उठाने का प्रतिफल लाभ होता है: जोखिम नहीं तो लाभ नहीं एक पुराना सिद्धांत है, जो सभी प्रकार के व्यवसायों में लागू होता है। किसी व्यवसाय में अधिक जोखिम होने पर लाभ अधिक होने का अवसर होता है। कोई भी उद्यमी भविष्य में अधिक लाभ पाने की लालसा में ही अधिक जोखिम उठाता है। लाभ इस प्रकार जोखिम का एक प्रतिफल है।

1.9.1 व्यावसायिक जोखिमों के कारण

व्यावसायिक जोखिमों के अनेकों कारण होते हैं जिनको निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(क) प्राकृतिक कारण: प्राकृतिक आपदाएँ जैसे–बाढ़, भूचाल, बिजली गिरना, भारी वर्षा, अकाल आदि पर मनुष्य का लगभग नहीं के बराबर नियंत्रण है। व्यवसाय में इनसे संपत्ति एवं आय की बड़ी भारी हानि हो सकती है।

(ख) मानवीय कारण: मानवीय कारणों में कर्मचारियों की बेईमानी, लापरवाही या अज्ञानता को सम्मिलित किया जा सकता है। बिजली फेल हो जाना, हड़ताल होना, प्रबंधकों की अकुशलता आदि भी मानवीय कारणों के अच्छे उदाहरण हैं।

(ग) आर्थिक कारण: इन कारणों में माल की मांग में अनिश्चितता, प्रतिस्पर्धा, मूल्य, ग्राहकों से देय राशि, तकनीक में परिवर्तन या उत्पादन की विधि में परिवर्तन आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। वित्तीय समस्याओं में ऋण पर ब्याज दर में वृद्धि, करों की भारी उगाही आदि भी इस प्रकार के कारणों की श्रेणी में आते हैं। परिणामत: व्यवसाय संचालन लागत (व्यय) असंभावित रूप से अधिक हो जाती है।

(घ) अन्य कारण: इनमें अदृश्य घटनाएँ जैस-राजनैतिक उथल-पुथल, मशीनों में खराबी, बॉयलर का फट जाना, मुद्रा विनमय दर में उतार-चढ़ाव आदि हैं जिनके कारण व्यवसाय में जोखिमों की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं।

1.9.2 व्यवसाय का आरंभ-मूल घटक

किसी व्यवसाय को प्रारंभ करना ठीक उसी प्रकार का काम है जैसे मनुष्य विभिन्न संसाधनों का उपयोग कर अपने प्रयत्नों से किसी निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करे। नए व्यवसाय की सफलता मुख्यत: उसके उद्यमी अथवा प्रवर्तक की इस योग्यता पर निर्भर करता है कि वह संभावित समस्याओं का पूर्वानुमान लगाने तथा कम से कम लागत में उनका समाधान करने में कितना सक्षम है। आज के व्यावसायिक जगत में यह इसलिए और भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि प्रतिस्पर्धा बड़ी कठोर है और जोखिम भी अधिक है। कुछ समस्याएँ जिनसे व्यावसायिक फर्मों को जूझना ही पड़ता है, वे बुनियादी प्रकृति की हैं। एक फैक्ट्री खोलने के लिए उसकी योजना बनाने तथा उसके क्रियान्वयन में व्यवसाय का स्थान, संभावित ग्राहक, साजो-सामान तथा उनकी किस्में, विन्यास, क्रय तथा वित्तीय समस्याएँ तथा कर्मचारियों के चयन आदि समस्याओं का ध्यान रखना। बड़े व्यवसाय में समस्याएँ और भी अधिक जटिल हो जाती हैं फिर भी कुछ मूल घटक ऐसे हैं, जिनका किसी व्यवसायी को व्यवसाय प्रारम्भ करते समय ध्यान रखना चाहिए। वे निम्नलिखित हैं:

(क) व्यवसाय के स्वरूप का चयन: किसी भी उद्यमी को नए व्यवसाय को प्रारंभ करने से0 पूर्व उसकी प्रकृति तथा प्रकार पर ध्यान देना चाहिए। स्वत: ही वह उस प्रकार के

जोखिमों से व्यवहार की विधियाँ

यद्यपि कोई भी व्यावसायिक उद्यम जोखिम से बचा हुआ नहीं है फिर भी बहुत सी ऐसी विधियाँ हैं जिनके द्वारा जोखिम भरी परिस्थितियों से आसानी से निबटा जा सकता है। उदाहरण के लिए-उद्यम द्वारा (अ) अति जोखिम भरे सौदों को न करना (ब) जोखिम कम करने के लिए अग्निशमन उपकरणों का सुरक्षात्मक उपयोग (स) जोखिम का बीमा कंपनी को हस्तांतरण करने के लिए बीमा पॉलिसी क्रय करना (द) चालू वर्ष की आय में कुछ संभावित जोखिमों के लिए आयोजन करना-जैसा कि डूबते एवं संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन अथवा (य) अन्य उद्यमों से जोखिमों को आपस में बांटना जैसे- उत्पादक तथा थोक व्यापारी द्वारा कीमतों के कम होने से हुई हानि को, विभाजित करने के लिए सहमत होना।

उद्योग या सेवा को चुनना पसंद करेगा जिसमें अधिक लाभ अर्जित करने की आशा हो, लेकिन यह निर्णय बाजार में ग्राहकों की आवश्यकता तथा उद्यमी के तकनीकी ज्ञान एवं उत्पाद विशेष के निर्माण में उसकी रुचि से प्रभावित होगा।

(ख) फर्म के आकारः व्यवसाय के आरम्भ करते समय व्यवसाय के आकार या उसके विस्तार, निर्णय संबंधी पहलू यह दूसरा महत्त्वपूर्ण निर्णय है, जिसका ध्यान रखा जाना चाहिए। कुछ घटक बड़े आकार के पक्ष में होते हैं, तो अन्य उसे सीमित रखने के पक्ष में होते हैं। यदि उद्यमी को यह विश्वास हो कि उसके उत्पाद की मांग बाज़ार में अच्छी होगी तथा वह व्यवसाय के लिए आवश्यक पूंजी का प्रबंध कर सकता है तो वह बड़े पैमाने पर व्यवसाय प्रारंभ करेगा। यदि बाज़ार की दशा अनिश्चित है तथा जोखिम भारी हैं तो छोटे पैमाने का व्यवसाय ही बेहतर रहेगा।

(ग) स्वामित्व के स्वरूप का चुनावः स्वामित्व के संबंध में संगठन का रूप एकाकी व्यापार, साझेदारी या संयुक्त पूँजी कंपनी का हो सकता है। उपयुक्त स्वामित्व स्वरूप का चुनाव पूंजी की आवश्यकता, स्वामियों के दायित्व, लाभ के विभाजन विधिक औपचारिकताएँ, व्यवसाय की निरंतरता हित-हस्तांतरण आदि पर निर्भर करेगा।

(घ) उद्यम का स्थानः व्यवसाय प्रारंभ करते समय ध्यान में रखने वाला एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटक है वह स्थान, जहाँ व्यावसायिक क्रियाओं का संचालन होगा। इसके संबंध में किसी भी त्रुटि का परिणाम ऊँची उत्पादन लागत, उचित प्रकार के उत्पादन निवेशों की प्राप्ति में असुविधा तथा ग्राहकों को अच्छी सेवा देने में कठिनाई के रूप में होगा। उद्यम के स्थान के चुनाव करने में कच्चे माल की उपलब्धि, श्रम, बिजली आपूर्ति, बैंकिंग, यातायात, संप्रेषण, भंडारण आदि महत्त्वपूर्ण विचारणीय घटक हैं।

(ङ) प्रस्थापन की वित्त व्यवस्थाः वित्त व्यवस्था से अभिप्राय प्रस्तावित व्यवसाय को प्रारंभ करने तथा उसकी निरंतरता के लिए आवश्यक पूंजी की व्यवस्था करना है। पूंजी की आवश्यकता स्थायी संपत्तियों जैसे- भूमि, भवन, मशीनरी तथा साजो-सामान तथा चालू संपत्तियों जैसे-कच्चा माल, देनदार (पुस्तक ऋण) तैयार माल का स्टॉक आदि में निवेश करने के लिए भी पूंजी की आवश्यकता होती है। दैनिक व्ययों का भुगतान करने के लिए भी पूंजी की आवश्यकता होती है। समुचित वित्तीय योजना (अ) पूंजी की आवश्यकता (ब) स्रोत जहाँ से पूंजी प्राप्त हो सकेगी तथा (स) फर्म में पूंजी के सर्वोत्तम उपयोग की निश्चित रूपरेखा बनाई जानी चाहिए।

(च) भौतिक सुविधाएँः व्यवसाय प्रारंभ करते समय भौतिक सुविधाओं की उपलब्धि का भी ध्यान रखना चाहिए जिसमें मशीन तथा साजो-समान, भवन एवं सहायक सेवाएँ शामिल हैं, क्योंकि ये भी बड़े महत्त्वपूर्ण घटक होते हैं। इस घटक का निर्णय व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार वित्त की उपलब्धता तथा उत्पादन प्रक्रिया पर निर्भर करेगा।

(छ) संयंत्र अभिन्यास (प्लांट लेआउट): जब भौतिक सुविधाओं की आवश्यकताएँ निश्चित हो जाएँ तो उद्यमी को संयत्र का ऐसा नक्शा बनाना चाहिए जिसमें सभी आवश्यक सुविधाएँ शामिल हों।

जिसमें वह इन भौतिक सुविधाओं को व्यवस्थित कर सके। अभिन्यास (नक्शा) से आशय प्रत्येक उस वस्तु की व्यवस्था करने से है जो किसी उत्पाद के निर्माण के लिए आवश्यक हो, जैसे-मशीन, मानव, कच्चा माल तथा निर्मित माल की भौतिक व्यवस्था।

(ज) सक्षम एवं वचनबद्ध कामगार बल: प्रत्येक उद्यम को विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए सक्षम एवं वचनबद्ध कामगार बल की आवश्यकता होती है ताकि भौतिक तथा वित्तीय संसाधनों को वांछित उत्पाद में परिवर्तित किया जा सके। कोई भी उद्यमी सभी कार्यों को स्वयं नहीं कर सकता। अत: उसे कुशल और अकुशल श्रम तथा प्रबंधकीय कर्मचारियों की आवश्यकताओं में तादात्मय स्थापित करना चाहिए। कर्मचारी अपने काम श्रेष्ठ तरीके से कर सकें इसके लिए प्रशिक्षण तथा उत्प्रेरण की समुचित व्यवस्था भी करनी होगी।

(झ) कर संबंधी योजना: आज-कल कर आयोजना एक आवश्यक कार्य बन गया है, क्योंकि देश में विविध कर कानून प्रचलित है, जो व्यवसाय की कार्यविधि के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं। व्यवसाय के प्रवर्तक को विभिन्न कर कानूनों के अंतर्गत कर दायित्व तथा व्यावसायिक निर्णयों पर उनके प्रभाव के संबंध में पहले से सोचकर चलना चाहिए।

(ण) उद्यम प्रवर्तन: उपरोक्त घटकों के विषय में निर्णय लेने के उपरांत, एक उद्यमी एक उद्यम के वास्तविक प्रवर्तन के लिए कार्यवाही कर सकता है जिसका तात्पर्य विभिन्न संसाधनों को गतिशीलता प्रदान करना, आवश्यक कानूनी औपचारिकताओं की पूर्ति, उत्पादन प्रक्रिया का श्रीगणेश तथा विक्रय प्रवर्तन अभियान को प्रोत्साहन देना होगा।

मुख्य शब्दावली

व्यवसाय	पेशा	प्राथमिक	नवप्रवर्तन
भंडारण	लाभ	रोजगार	द्वितीयक
बीमा	सामाजिक उत्तरदायित्व	जोखिम	उद्योग
तृतीयक	खनन	विनिर्माण	

सारांश

व्यवसाय की अवधारणा तथा विशेषताएँ:

व्यवसाय से आशय उन आर्थिक क्रियाओं से है, जिनमें, समाज में मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं और सेवाओं का सृजन एवं विक्रय किया जाता है। इसकी विशिष्ट विशेषताएँ हैं: 1. आर्थिक क्रिया 2. वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एवं प्राप्ति 3. मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं का विक्रय एवं विनिमय 4. नियमित रूप से वस्तुओं और सेवाओं का लेन-देन 5. लाभ अर्जन 6. प्रतिफल की अनिश्चितता एवं 7. जोखिम के तत्त्व।

व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार में तुलना:

व्यवसाय का अभिप्राय उन आर्थिक क्रियाओं से है जिनका संबंध लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं का उत्पादन, या क्रय-विक्रय, या सेवाओं की पूर्ति से हो। पेशे में वे क्रियाएँ सम्मिलित हैं जिनमें विशेष ज्ञान व दक्षता की आवश्यकता होती है और व्यक्ति इनका प्रयोग अपने धंधे में करता है। रोजगार का अभिप्राय उन धंधों से है जिनमें लोग नियमित रूप से दूसरों के लिए कार्य करते हैं और बदले में पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं। इन तीनों की तुलना स्थापना की विधि, कार्य की प्रकृति, आवश्यक योग्यता, पुरस्कार या प्रतिफल, पूंजी विनियोजन, जोखिम, हित हस्तांतरण तथा आचार संहिता के आधार पर किया जा सकता है।

व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण:

व्यावसायिक क्रियाओं को दो विस्तृत वर्गों में विभाजित किया जा सकता है: उद्योग और वाणिज्य। उद्योग से तात्पर्य वस्तुओं एवं पदार्थो का उत्पादन अथवा संसाधित करना है। उद्योग प्राथमिक, द्वितीयक या माध्यमिक तथा तृतीयक सेवा उद्योग हो सकते हैं। प्राथमिक उद्योगों में वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित हैं जिनका संबंध प्राकृतिक संसाधनों के खनन एवं उत्पादन तथा पशु एवं वनस्पति के विकास से है। प्राथमिक उद्योग निष्कर्षण (जैसे खनन) अथवा जननिक (जैसे मुर्गी पालन) प्रकार के हैं। द्वितीयक या माध्यमिक उद्योगों में निष्कर्षण उद्योगों द्वारा निष्कर्षित माल को कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। ये उद्योग विनिर्माणी या रचनात्मक कहलाते हो सकते हैं। विनिर्माणी उद्योगों को विश्लेषणात्मक, कृत्रिम प्रक्रिया तथा व्यवस्थित के रूप में विभाजित किया जा सकता है। तृतीयक या सेवा उद्योग प्राथमिक तथा द्वितीयक उद्योगों को सहायक सेवाएँ सुलभ कराने में संलग्न रहते हैं तथा व्यापार संबंधित कार्यों में भी सहायता करते हैं।

वाणिज्य से तात्पर्य व्यापार और व्यापार की सहायक क्रियाओं से है। व्यापार का संबंध वस्तुओं के विक्रय, हस्तांतरण अथवा विनिमय से है। इसको आंतरिक (देशीय) तथा बाह्य (विदेशी) व्यापार के रूप में विभाजित किया जाता है। आंतरिक व्यापार को पुन: थोक व्यापार या फुटकर व्यापार में विभाजित किया जा सकता है। एक अन्य विभाजन बाह्य व्यापार, आयात, निर्यात अथवा पुनर्निर्यात व्यापार के रूप में भी हो सकता है। व्यापार की सहायक क्रियाएँ वे हैं जो व्यापार को सहायता प्रदान करती हैं। इनमें परिवहन तथा संचार, बैंकिंग एवं वित्त, बीमा, भंडारण तथा विज्ञापन सम्मिलित हैं।

व्यवसाय के उद्देश्य: यद्यपि केवल लाभ कमाना ही व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य समझा जाता है। व्यवसाय के लिए उद्देश्यों की आवश्यकता प्रत्येक उस क्षेत्र में होती है, जो निष्पादन परिणाम व्यवसाय के जीवन और समृद्धि को प्रभावित करते हैं। उद्देश्यों में से कुछ हैं क्षेत्र बाज़ार स्थिति नवप्रवर्तन, उत्पादकता, भौतिक एवं वित्तीय संसाधन, लाभदायकता, प्रबंधक निष्पादन एवं विकास, कर्मचारी निष्पादन एवं अभिवृत्ति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व।

व्यावसायिक जोखिम: व्यावसायिक जोखिमों से आशय अपर्याप्त लाभ या फिर हानि होने की संभावना से है, जो अनिश्चितताओं या असंभावित घटनाओं के कारण होती है। इनकी प्रकृति को इनकी विशिष्ट विशेषताओं की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है, जो निम्न है:

1. व्यावसायिक जोखिम अनिश्चितताओं के कारण होते हैं,
2. जोखिम प्रत्येक व्यवसाय का अंग होता है,
3. जोखिम की मात्रा मुख्यत: व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार पर निर्भर करती है, तथा
4. जोखिम उठाने का प्रतिफल लाभ होता है।

व्यावसायिक जोखिमों के अनेकों कारण होते हैं जिनको निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है जैसे- प्राकृतिक, मानवीय, आर्थिक तथा अन्य कारण हैं।

व्यवसाय का आरंभ: मूल घटक जिनका एक व्यवसायी को जो एक व्यवसाय प्रारंभ करने के पूर्व ध्यान में रखना चाहिए, वे— व्यवसाय के स्वरूप का चयन, फर्म का आकार, स्वामित्व के रूप का चुनाव, उद्यम का स्थान, वित्त व्यवस्था प्रस्तावना, भौतिक सुविधाएँ, संयंत्र अभिन्यास तथा वचनबद्ध कामगार बल का आयोजन तथा उद्यम प्रवर्तन, हो सकते हैं।

अभ्यास

बहु विकल्प प्रश्न:

1. निम्नलिखित में से कौन-सी क्रिया व्यावसायिक गतिविधि का चरित्र-चित्रण नहीं करती है:
   (क) वस्तुओं एवं सेवाओं का सृजन (ख) जोखिम की विद्यमानता
   (ग) वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री अथवा विनिमय
   (घ) वेतन अथवा मजदूरी
2. तेल शोधक कारखाने तथा चीनी मिलें किस उद्योग की विस्तृत श्रेणी में आते हैं।
   (क) प्राथमिक (ख) द्वितीयक
   (ग) तृतीयक (घ) किसी में नहीं
3. निम्नलिखित में से किसे व्यापार के सहायक की श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता:
   (क) खनन (ख) बीमा
   (ग) भंडारण (घ) यातायात

4. ऐसे धंधे को किस नाम से पुकारते हैं? जिसमें लोग नियमित रूप से दूसरों के लिए कार्य करते हैं और बदले में पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं।
   (क) व्यवसाय (ख) रोजगार
   (ग) पेशा (घ) इनमें से कोई नहीं।
5. ऐसे उद्योगों को क्या कहते हैं जो दूसरे उद्योगों को समर्थन सेवा सुलभ करते हैं।
   (क) प्राथमिक उद्योग (ख) द्वितीयक उद्योग
   (ग) वाणिज्यिक उद्योग (घ) तृतीयक उद्योग
6. निम्नलिखित में से किसको व्यावसायिक उद्देश्य की श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता:
   (क) विनियोग (ख) उत्पादकता
   (ग) नवप्रवर्तन (घ) लाभदायकता
7. व्यावसायिक जोखिम होने की संभावना नहीं होती है।
   (क) सरकारी नीति में परिवर्तन से (ख) अच्छे प्रबंध से
   (ग) कर्मचारियों की बेईमानी से (घ) बिजली गुल होने से

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं को बताइए।
2. व्यवसाय को एक आर्थिक क्रिया क्यों समझा जाता है?
3. व्यवसाय की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।
4. व्यावसायिक क्रिया-कलापों को आप कैसे वर्गीकृत करेंगे।
5. उद्योगों के विभिन्न प्रकार क्या हैं?
6. ऐसी कोई दो व्यावसायिक क्रियाओं को स्पष्ट कीजिए जो व्यापार की सहायक होती है।
7. व्यवसाय में लाभ की क्या भूमिका होती है?
8. व्यावसायिक जोखिम क्या होता है? इसकी प्रकृति क्या है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

1. व्यवसाय की विशेषताओं को समझाइए।
2. व्यवसाय की तुलना पेशा तथा रोजगार से कीजिए।
3. विभिन्न प्रकार के उद्योगों को उदाहरण सहित समझाइए।
4. वाणिज्य से संबंधित क्रियाओं का वर्णन कीजिए।
5. व्यवसाय के बहु-उद्देश्य क्या हैं? उनमें से किन्ही पाँच उद्देश्यों को समझाइए।
6. व्यावसायिक जोखिमों की अवधारणा को समझाइए तथा इनके कारणों को भी स्पष्ट कीजिए।
7. एक व्यवसाय प्रारंभ करते समय कौन-कौन से महत्त्वपूर्ण कारकों को ध्यान में रखना चाहिए? समझाकर लिखिए।

परियोजना कार्य

1. किसी स्थानीय संचालित व्यापारिक अथवा व्यावसायिक इकाई का चुनाव कीजिए तथा यह पता लगाइए कि उस व्यवसाय में कितने प्रकार की जोखिमों का सामना करना पड़ता है तथा वे इन जोखिमों से कैसे निपटते हैं?
2. एक स्थानीय व्यावसायिक इकाई का चुनाव कीजिए तथा पता लगाइए कि उसके उद्देश्य क्या हैं? यह भी जाँच-पड़ताल कीजिए कि वे अन्य उद्देश्यों को क्यों नहीं अपनाते हैं?